जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

चूरू

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

फोनः- 256906, 256907, फैक्सः- 01562-256908 वर्षः 14 संख्याः 265 प्रभात चूरू, सोमवार 23 जनवरी, 2023 पो. रजि. न. चूरू/084/2019-21 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

मिस्र की एक प्राचीन पेंटिंग में एक दलदली क्षेत्र के ऊपर उड़ते और पेड़ पर बैठे पक्षियों को इतनी बारीकी से दर्शाया गया है कि, आधुनिक विशेषज्ञ बता सकते हैं कि, 3300 साल पहले बनी इस पेंटिंग में कौन-कौन से पक्षी हैं। अमराना के महल की दीवार पर बनी इस पेंटिंग की खोज एक सदी पूर्व हुई थी। अमराना मिस्र की प्राचीन राजधानी है, जो मौजूदा राजधानी कायरो के दक्षिण में 300 किलोमीटर की दूरी पर है। यद्यपि पूर्व शोध में इस चित्र में मौजूद वन्यजीवों का परीक्षण किया गया था पर नया शोध ऐसा पहला अध्ययन है, जिसमें सभी पक्षियों की पहचान की गई है, जिनमें से कुछ पक्षियों पर असामान्य चिन्ह मिले हैं। सह शोधकर्ता क्रिस्टोफर स्टिम्पसन, जो ऑक्सफर्ड युनिवर्सिटी म्यूज़ियम ऑफ नैचुरल हिस्ट्री के ऑनरेरी एसोसिएट हैं और शोध के सहलेखक बैरी कैम्प, जो युनिवर्सिटी ऑफ केम्ब्रिज में ईजिप्टॉलजी के प्रोफेसर हैं, ने 15 दिसम्बर को जर्नल एंटीक्विटी में प्रकाशित अध्ययन में लिखा था कि, इस म्यूरल (भित्ति चित्र) में दर्शाए गए पक्षियों में से कई रॉक पिजन हैं, लेकिन, कुछ आकृतियाँ पाइड किंगफिशर जैसी हैं। एक रैंड बैक्ड श्राइक और एक वाइट वैंगटेल भी हैं। टीम ने म्यूरल की एक प्रतिकृति का अध्ययन किया और पक्षियों की पहचान करने के लिए पूर्व में प्रकाशित शोध पत्रों की मदद ली। अमराना महल का उक्त कक्ष, जिसे आज "ग्रीन रुम" कहा जाता है, की दीवारों पर वॉटर लिलीज़, पपायरस प्लांट्स और पक्षियों को चित्रित किया गया है। लगता है यह दृश्य, कक्ष में एक शांत वातावरण पैदा करने के लिए बनाया गया था ताकि शाही परिवार आराम कर सके। यह कहना उचित होगा कि, उस काल में भी, प्राकृतिक वातावरण का शांति देने वाला असर राजपरिवार के लिए उतना ही महत्वपूर्ण था, जितना आज बताया जाता है। संभव है कि, कक्ष में असली पौधे और परफ्यूम भी रखे जाते थे और मिस्र का प्राचीन संगीत भी बजाया जाता था। वर्ष 1353 ईसापूर्व से 1336 ईसापूर्व के बीच मिस्र पर फरो आखनातन (तूतनखामन के पिता) का शासन था। इजिप्ट एक्सप्लोरेशन सोसाइटी ने वर्ष 1923 से 1925 के बीच अमराना में उत्खनन किया था। ग्रीन रुम की पेंटिंग्स काफी नाज़ुक हालत में थीं। ईजिप्टॉलजिस्ट नीना डी गारी डेवीस ने स्वयं पेंट करके इन म्यूरल्स की प्रतिकृतियाँ तैयार की हैं। ये प्रतिकृतियां बहुत महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि मूल पेंटिंग्स तो अब हैं नहीं।

'न्यायपालिका ने जजों की नियुक्ति का फैसला अपने हाथ में लेकर संविधान को बंधक बना लिया है'

कानून मंत्री किरेन रिजिजू ने सेवानिवृत्त जस्टिस आर.एस. सोढ़ी का ट्वीट शेयर करके उनके इन विचारों का समर्थन करने की अपील की

- **रिजिजू ने दिल्ली हाईकोर्ट के पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति आर.एस. सोढ़ी (सेवानिवृत्त) के एक इंअरव्यू का वीडियो साझा करते हुए कहा कि, यह एक न्यायाधीश की आवाज है और अधिकांश लोगों के समान समझदार विचार हैं।**
- **वीडियो में जस्टिस सोढ़ी कह रहे हैं कि, कानून बनाने का काम केवल संसद का है, संविधान ने संसद को यह अधिकार प्रदान किया है, न्यायपालिका इस मामले में संसद के अधिकारों का हनन नहीं कर सकती।**

नई दिल्ली, 22 जनवरी। कानून मंत्री किरेन रिजिजू ने रविवार को उच्च न्यायालय के एक सेवानिवृत्त न्यायाधीश के विचारों का समर्थन करने की मांग की, किरेन रिजिजू ने जस्टिस आर.एस. सोढ़ी का वीडियो ट्विटर पर शेयर किया था। जस्टिस सोढ़ी ने कहा था कि उच्चतम न्यायालय ने खुद न्यायाधीशों की नियुक्ति का फैसला कर संविधान का अपहरण किया है। गौरतलब हैं कि उच्च न्यायपालिका में न्यायाधीशों की नियुक्ति की प्रक्रिया को लेकर सरकार और न्यायपालिका के बीच टकराव रहा है। रिजिजू ने दिल्ली कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति आर एस सोढ़ी (सेवानिवृत्त) के एक साक्षात्कार का वीडियो साझा करते हुए कहा कि यह एक न्यायाधीश की आवाज है और अधिकांश लोगों के समान समझदार विचार हैं।

न्यायमूर्ति सोढ़ी ने कहा कि कानून बनाने का अधिकार संसद के पास है। कानून मंत्री ने यह भी कहा कि वास्तव में अधिकांश लोगों के समान विचार हैं। यह केवल वे लोग हैं जो संविधान के प्रावधानों की अवहेलना करते हैं और लोगों के जनादेश को लगता है कि वे भारत के संविधान से ऊपर हैं। मंत्री ने ट्वीट किया, "भारतीय लोकतंत्र की असली सुंदरता इसकी सफलता है"। लोग अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से खुद पर शासन करते हैं। चुने हुए प्रतिनिधि लोगों के हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं और कानून बनाते हैं।

हमारी न्यायपालिका स्वतंत्र है और हमारा संविधान सर्वोच्च है। साक्षात्कार में न्यायमूर्ति सोढ़ी ने यह भी कहा कि शीर्ष अदालत कानून नहीं बना सकती क्योंकि उसके पास ऐसा करने का अधिकार नहीं है। उन्होंने कहा कि कानून बनाने का अधिकार संसद का है।

"क्या आप संविधान में संशोधन कर सकते हैं? केवल संसद संविधान में संशोधन करेगी। लेकिन यहां मुझे लगता है कि सुप्रीम कोर्ट ने पहली बार संविधान का अपहरण किया है। अपहरण के बाद उन्होंने कहा कि हम (न्यायाधीशों) की नियुक्ति करेंगे। जस्टिस सोढ़ी ने हिंदी में कहा, हमारी और सरकार की इसमें कोई भूमिका नहीं होगी"।

सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालयों में न्यायाधीशों की नियुक्ति कार्यपालिका और न्यायपालिका के बीच एक प्रमुख संघर्ष बिंदु बन गई है। जबकि रिजिजू ने न्यायाधीशों की नियुक्ति के लिए कॉलेजियम प्रणाली को भारतीय

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

भाजपा ने येदियुरप्पा को अपनी सर्वोच्च संस्था, संसदीय समिति का सदस्य बनाया

भाजपा ने कर्नाटक में मोदी-बोम्मई व येदि्दयुरप्पा "थ्री स्टार" रणनीति पर काम करने का फैसला किया

- **भाजपा जानती है कि, पूर्व मुख्यमंत्री येदि्दयुरप्पा की कर्नाटक में लिंगायत समुदाय के बीच जबरदस्त पकड़ है तथा भाजपा 2013 में येदि्दयुरप्पा को नाराज करने का जोखिम मोल ले चुकी है। 2013 के विधानसभा चुनाव में भाजपा 40 सीटों पर सिमट गई थी।**
- **वहीं दूसरी तरफ, भाजपा ने मुख्यमंत्री बासवराज बोम्मई के जरिये वोक्कालिगा मतदाताओं को लुभाने की रणनीति बनाई है।**

बेंगलुरु 22 जनवरी (वार्ता)। कर्नाट में पूर्व मुख्यमंत्री बी.एस. येदियुरप्पा को कथित रूप से दरकिनार किए जाने की अपुष्ट मीडिया रिपोर्टों के बीच भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) का केंद्रीय नेतृत्व आगामी विधानसभा चुनाव में स्पष्ट बहुमत हासिल करने के लिए 'मोदी-बोम्मई-बी.एस.वाई.' रणनीति पर चुपचाप तरीके से काम कर रहा है।

दरअसल येदियुरप्पा भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और कर्नाटक के मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई के साथ-साथ सोशल इंजीनियरिंग तथा आरक्षण कोटा सहित अन्य मुद्दों की मदद से बड़ी जीत हासिल करना चाहते हैं।

भाजपा नेतृत्व ने येदियुरप्पा को अपनी सर्वोच्च और सबसे शक्तिशाली निर्णय लेने वाली संस्था (संसदीय समिति) का सदस्य बनाया, ताकि उन्हें अनदेखा न किया जा सके। बल्कि कर्नाटक की राजनीति में उनकी राजनीतिक पहुँच का उपयोग किया जा सके। इसका अंदाजा इस बात से भी लगाया जा सकता है, जब 2019 में भाजपा को सरकार बनाने का मौका मिलने के बाद उन्हें मुख्यमंत्री बनाया गया था।

इतना ही नहीं, भाजपा येदियुरप्पा को नजरअंदाज करने से खुद को होने वाले नुकसान से भी वाकिफ है, जो उसने वास्तव में तब किया जब उन्होंने अपना कर्नाटक जनता पक्ष बनाने के लिए पार्टी छोड़ दी। वर्ष 2013 के चुनाव में भाजपा 40 सीटों पर सिमट गई थी। भ्रष्टाचार के आरोपों पर मुख्यमंत्री पद से हटने के लिए कहे जाने के बाद लिंगायत समुदाय के नेता येदियुरप्पा ने अपनी पार्टी बनाई थी।

साल 2014 के लोकसभा चुनाव के बाद से वोक्कालिगा मतदाताओं पर जनता दल (सेक्युलर) की पकड़ को ध्यान में रखते हुए 2021 में येदियुरप्पा के स्थान पर पार्टी ने बोम्मई को मुख्यमंत्री बनाया गया था।

वैसे बोम्मई में अभी भी दोबारा मुख्यमंत्री बनने की क्षमता है। वे जद (एस) में पूर्व प्रधानमंत्री एच.डी. देवेगौड़ा के राजनीतिक सचिव रहे हैं। इसलिए बोम्मई के पास जद (एस) के मजबूत और कमजोर बिंदुओं की भरपूर जानकारी है। क्या यह भाजपा के पक्ष में काम करेगा, यह तो आने वाला समय ही बताएगा।

भाजपा ने इस बार वोक्कालिगा मतदाताओं को लुभाने की रणनीति बनाई है, जबकि पिछले मौकों पर इसका फोकस मुख्य रूप से लिंगायत वोटों पर था। सोशल इंजीनियरिंग के मामले में, भाजपा दलित और वनवासी मतदाताओं के महत्व को बहुत अच्छी तरह से समझती है। राज्य में इन समुदायों के लिए 51 विधानसभा सीटें आरक्षित हैं।

इसे देखते हुए, राष्ट्रपति के रूप में द्रौपदी मुर्मू के चुनाव के बाद से ही आदिवासियों को लुभाने के भाजपा के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अमेरिका में जश्न के बीच गोलीबारी, 10 की मौत

कैलिफोर्निया, 22 जनवरी (वार्ता)। अमेरिका में कैलिफोर्निया के मोंटेरे पार्क में हुई गोलीबारी में कम से कम 10 लोगों की मौत हो गयी और 16 अन्य घायल हो गये। मीडिया रिपोर्ट में यह जानकारी मिली है।

यह घटना शनिवार को स्थानीय समयानुसार रात दस बजे लॉस एंजिल्स से लगभग 13 किमी पूर्व में स्थित मोंटेरी पार्क में हुई। बीबीसी की खबर के

- **मशीनगन साथ लेकर आये एक व्यक्ति ने लोगों पर अंधाधुंध फायरिंग की।**

मुताबिक इससे पहले मोंटेरे पार्क चंद्र नव वर्ष उत्सव के लिए हजारों लोग शहर में इकट्ठा हुए थे।

वार्षिक चंद्र नववर्ष उत्सव एक सप्ताह तक चलने वाला कार्यक्रम है, जिसमें पूर्व में एक लाख से अधिक आगंतुक भाग ले चुके हैं। प्राप्त जानकारी के मुताबिक कल रात यह उत्सव स्थानीय समयानुसार रात नौ बजे समाप्त होने वाला था।

मोंटेरे पार्क में करीब 60,000 लोग रहते हैं जिनमें से अधिकांश एशियाई समुदाय के लोग यहां रहते हैं।

'सुप्रीम कोर्ट के फैसले हिन्दी सहित अन्य भाषाओं में भी जारी होंगे'

मुख्य न्यायाधीश डी.वाई चंद्रचूड़ ने कहा कि, हम जो काम करते हैं, वह हमारी आबादी के 99 प्रतिशत लोगों तक नहीं पहुंच पा रहा है

- **उन्होंने कहा कि, सुप्रीम कोर्ट देश के हर तबके के लोगों के बीच अपनी पहुँच आसान बनाने के लिए प्रयास कर रहा है।**
- **प्रधानमंत्री मोदी ने जस्टिस चंद्रचूड़ के इन प्रयासों की सार्वजनिक तौर पर सरहना की।**

नई दिल्ली, 22 जनवरी। सुप्रीम कोर्ट के फैसले बहुत जल्द हिन्दी साथ-साथ अन्य भाषाओं में भी जारी किये जायेंगे। मुख्य न्यायाधीश जस्टिस डी. वाई. चंद्रचूड़ ने एक कार्यक्रम के दौरान इस बारे में स्पष्ट रूप से अपनी राय रखी और कहा कि, सुप्रीम कोर्ट इस बारे में तेजी से प्रयास कर रहा है।

महाराष्ट्र और गोवा की बार काउंसिल द्वारा सुविधा समारोह में बोलते हुए, जस्टिस चंद्रचूड़ ने कहा, "हमारे मिशन में अगला कदम हर भारतीय भाषा में सर्वोच्च न्यायालय के निर्णयों की अनुवादित प्रतियां प्रदान करना है। एक ग्रामीण वादी के लिए क्या अच्छा है जो अंग्रेजी में कार्यकाल और भाषा की दृढता को नहीं समझता है। इसलिए जब तक हम नहीं पहुंचते हैं। हमारे नागरिकों के लिए उस भाषा में जिसे वे समझ सकते हैं, जिस तरीके से वे समझ सकते हैं।

उन्होंने आगे कहा, "हम जो काम करते हैं, वह हमारी आबादी के 99 प्रतिशत तक नहीं पहुंच रहा है। इसलिए मैं प्रौद्योगिकी पर विश्वास करता हूं। जब आप प्रौद्योगिकी को अपनाते हैं तो हमेशा कुछ हद तक आलोचना होती है। इसके साथ एक तकनीकी विभाजन होता है। जिन लोगों के पास प्रौद्योगिकी तक पहुंच नहीं है, हमने छोड़ दिया। लेकिन प्रौद्योगिकी के उपयोग के लिए मेरा मिशन प्रौद्योगिकी को उन लोगों तक पहुंचाना है जिनके पास पहुंच नहीं है और इसलिए प्रौद्योगिकी के माध्यम से पहुंच के लिए और अवरोध पैदा नहीं करना चाहिए।"

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी मुख्य न्यायाधीश चंद्रचूड़ के इन विचारों की खुलेआम तारीफ की। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को भारत के मुख्य न्यायाधीश डी.वाई. चंद्रचूड़ की उनकी टिप्पणी के लिए सर्वोच्च न्यायालय के निर्णयों को क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध कराने की उनकी टिप्पणी के लिए सराहना की। प्रधानमंत्री मोदी ने एक कार्यक्रम में सी.जे.आई. के संबोधन का एक वीडियो साझा किया, जहां उन्होंने शीर्ष अदालत के फैसलों का हर भारतीय भाषा में अनुवाद करने और इस उद्देश्य के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने की वकालत की।

प्रधानमंत्री ने ट्विटर पर कहा, "हाल ही में एक समारोह में, न्यायमूर्ति डी. वाई. चंद्रचूड़ ने क्षेत्रीय भाषाओं में जारी के निर्णयों को उपलब्ध कराने की दिशा में काम करने की आवश्यकता के बारे में बात की। उन्होंने इसके लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग का भी सुझाव दिया। यह एक प्रशंसनीय विचार है।" जो

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विप्रो ने 400 कर्मचारियों को नौकरी से निकाला

मुंबई, 22 जनवरी। देश की दिग्गज आई.टी. कंपनी विप्रो से भी छटनी की खबर है। कंपनी की तरफ से कहा गया है कि 400 से अधिक कर्मचारियों को निकाल दिया गया है। ये सभी कर्मचारी नवनियुक्त ही हुये थे, कंपनी ने इस बारे में कहा है कि, इन कर्मचारियों का ट्रेनिंग के बाद भी उनका आंतरिक मूल्यांकन काफी खराब था। कंपनी ने बयान में कहा

- **विप्रो की ओर से जारी बयान में कहा गया है कि, ये कर्मचारी अभी हाल में कंपनी से जुड़े थे लेकिन ये सभी कंपनी के दक्षता मानकों पर खरा नहीं उतर पा रहे थे।**

कि हम खुद को उच्चतम मानकों पर रखने में गर्व महसूस करते हैं। मानकों के अनुरूप, हमारा लक्ष्य खुद के लिए निर्धारित करना है, हम प्रत्येक एंट्री लेवर के कर्मचारी से उनके कार्य के निर्दिष्ट क्षेत्र में एक निश्चित स्तर की कुशलता की उम्मीद करते हैं। कंपनी ने कहा कि मूल्यांकन प्रक्रिया में कंपनी के व्यावसायिक उद्देश्यों और हमारे क्लाइंट की आवश्यकताओं के अनुसार

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

हथियारों की कमी से जूझ रहा यूक्रेन, नेटो देशों ने भी हाथ पीछे खींचे

अमेरिका ने हालांकि, यूक्रेन के लिए 2.5 अरब डॉलर के पैकेज की घोषणा करके खानापूर्ति की है, लेकिन यूक्रेन इस स्थिति को ज्यादा दिनों तक झेल नहीं पायेगा

- **यूक्रेन बार-बार सहयोगी देशों से हथियार, विशेष तौर पर युद्धक टैंकों की मांग कर रहा है लेकिन फिलहाल सहयोगी देशों में से कोई भी यूक्रेन की मदद करने के लिए आगे नहीं आया है।**
- **जर्मनी ने महीनों पहले यूक्रेन को लैपर्ड-2 टैंक देने की घोषणा तो की थी लेकिन अब जर्मनी ने भी हाथ खड़े कर दिये हैं।**
- **असल बात यह है कि, यूक्रेन की मदद करते-करते नेटो देशों के अतिरिक्त कोटे के हथियार खत्म हो चुके हैं तथा कोई भी देश अपने देश के युद्ध कोटे से हथियार देने का जोखिम नहीं उठाना चाहता।**

मॉस्को/नई दिल्ली, 22 जनवरी। रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध को चलते हुये 11 महीने से अधिक समय बीत चुका है। अब रिपोर्ट यह आ रही है कि, इतने लम्बे समय से रूस को झेलते-झेलते यूक्रेन के हथियार खत्म हो चुके हैं। हाल ही में अमेरिका ने उसे 2.5 अरब डॉलर के स्ट्राइकर समेत अन्य अत्याधुनिक हथियार दिए हैं, लेकिन सबसे बड़ी बात यह है कि, यूक्रेन के पास युद्ध में सबसे अहम भूमिका निभाने वाले टैंक खत्म हो गये हैं। जर्मनी भी अभी तक यूक्रेन को तेंदुआ टैंक (लैपर्ड टैंक) की सप्लाई नहीं कर पाया है। इससे यूक्रेन का हौसला टूटने लगा है। इधर पुतिन की सेना ने यूक्रेन पर हमले को और तेज कर दिया है। सूत्रों के अनुसार अब नाटो और अमेरिका के पास भी अतिरिक्त उन्नत टैंक नहीं रह गए हैं, जो यूक्रेन को दिए जा सकें। अगर अब और अधिक हथियार यूक्रेन को दिए जाते हैं तो देश अपनी सुरक्षा के स्टॉक से ही दे सकेंगे। मगर ऐसा जोखिम कोई भी देश लेने को तैयार नहीं है। ऐसे में रूस तेजी से जीत की राह पर आगे बढ़ चला है।

यूक्रेन के एक शीर्ष राजनयिक ने शुक्रवार को बताया कि रूस द्वारा वसंत ऋतु में प्रत्याशित आक्रमण शुरू करने से पहले पश्चिमी टैंकों को यूक्रेन में लाने के लिए "समय सार का है"। यूक्रेन के राजदूत ओक्साना मार्कारोवा ने संयुक्त राज्य अमेरिका में कहा "हमें अब इन टैंकों की आवश्यकता है। ताकि हमारे बहादुर रक्षकों की रक्षा की जा सके। मार्कारोवा ने कहा कि इसके जरिये हम युद्धाभ्यास कर सकते हैं, आग लगा सकते हैं और वास्तव में हम जवाबी हमले पर वापस जा सकते हैं और हम इस भविष्य के हमलों को रोक सकते हैं। इसकी हमें बहुत आवश्यकता है। क्योंकि रूस वास्तव में इस दौरान युद्ध को विस्तार करने की योजना बना रहा है।

टैंकों की कमी से जूझ रहे यूक्रेन को वादे के बावजूद जर्मनी ने अब तक अपने प्रमुख पश्चिमी सहयोगियों के साथ यूक्रेन में लैपर्ड-2 टैंक भेजने में विफल रहा है। जबकि कीव ने जर्मनी से और अधिक हथियारों की सप्लाई करने को कहा था। जेलेंस्की ने जर्मनी से सैन्य सहायता की अपील की थी। मगर वह पीछे हट गया है। हालांकि जर्मनी ने इन दावों का खंडन किया है कि वह अपने पैरों को खींच रहा है और उसने अमेरिका से यूक्रेन को अपने टैंक भेजने के लिए कहा है। यूक्रेन के राजदूत मार्कारोवा से जब अन्तर्राष्ट्रीय मीडिया ने पूछा कि अमेरिकी सरकार के तर्क कि "एम 1 अब्राम टैंक को संचालित करना और बनाए रखना अधिक कठिन होगा और इसलिए वह जर्मन तेंदुआ टैंक की अपेक्षा कम उपयोगी हैं" के सवाल पर कहा कि निश्चित रूप से हम अपने सहयोगियों के साथ परामर्श कर रहे हैं। हमारे लिए सबसे प्रभावी क्या होगा? जिसे हम बड़ी संख्या में क्या प्राप्त कर सकते हैं और खुद को युद्ध के मैदान पर बनाए रख सकते हैं। यदि आवश्यक हो तो हम टैंकों की मरम्मत भी कर सकते हैं।

यूक्रेन के राजदूत मार्कारोवा ने कहा कि बिना हथियार लड़ाई लड़ना संभव नहीं है। हमें ऐसा लगता है कि तेंदुआ टैंक एक ऐसी चीज है जिस पर कई सहयोगी हमारे साथ चर्चा करने के लिए तैयार हैं। यह अच्छी संख्या में है और इसे बनाए रखना और मरम्मत करना थोड़ा आसान होगा। हम सभी विकल्पों पर बात कर रहे हैं। पश्चिमी टैंकों की आपूर्ति पर चिंता के बावजूद, राजदूत ने अमेरिका के नवीनतम सहायता पैकेज और अन्य सहयोगियों को उनके सभी सैन्य समर्थन के लिए धन्यवाद दिया।

वहीं यूक्रेन के उप विदेश मंत्री एंड्री मेलनीक ने कहा कि जर्मनी ने अभी तक टैंकों के संबंध में कोई निर्णय नहीं लिया है। जर्मनी ने अभी तक यह तय नहीं किया है कि अपने तेंदुए 2 टैंकों को यूक्रेन भेजा जाए या नहीं। उन्होंने चैलेंजर- 2 टैंकों की प्रतिज्ञा के साथ आगे बढ़ने के लिए पहली बार यूक्रेन की प्रशंसा करने के बाद मेल्नेक ने जर्मनी की अनिर्णयता को एक "निराशा" कहा। उन्होंने कहा कि उन्हें उम्मीद है कि इस कदम से अन्य देशों को सूट का पालन करने के लिए ट्रिगर किया जा सकता है।

'रूस पर से निर्भरता कम की है यूरोपीय देशों ने'

नई दिल्ली/ब्रसेल्स 22 जनवरी (वार्ता)। यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सला वॉन डेर लेयेन ने कहा है कि यूरोप के देशों ने खनिज तेल और गैस की आपूर्ति के लिए रूस से आयात पर निर्भरता काफी हद तक कम कर ली है लेकिन वह अभी तक इस मुश्किल से बाहर नहीं निकले है।

लेयेन यूरोपीय आयोग की बैठक को सम्बोधित करे हुए कहा कि हमें अब अगले सर्दी के मौसम की तैयारी अभी

- **यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सला वॉन डेर लेयेन ने कहा कि, लेकिन हम अभी तक इस मुश्किल से बाहर नहीं निकले हैं।**

से करनी है।

उन्होंने कहा, हम रूस से जो खनिज ईंधन आयात करते है उसके अधिकांश हिस्से का विकल्प निकाल लिया है। हमने नवीकरणीय ऊर्जा का अतिरिक्त प्रबंध दोगुना कर लिया है।

उन्होंने कहा, लेकिन अभी हम संकट से उबर नहीं पाए हैं हमें अगली सर्दियों की तैयारी करनी है। यूक्रेन- रूस युद्ध को रूस के कुछ कथित हमलों को उसके आतंकवाद का नमूना बताया।